दयानंद शिक्षण संस्थाको ७५ वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में प्रमुख अतिथिओं के करकमलों से ‘‘होम-हवन’’

सोलापुरः दयानंद शिक्षण संस्था को ७५ वर्ष पूरे हो रहे हैं, इस उपलक्ष्य में डॉ. एस.के. शर्माजी, सचिव, आर्य प्रादेशिक प्रातिनिधि सभा, नई दिल्ली) तथा श्री. सत्पाल आर्यजी (सहसचिव, आर्य प्रादेशिक प्रातिनिधि सभा, नई दिल्ली तथा सचिव, डी.ए.व्ही. कॉलेज मॅनेजिंग कमिटी, नई दिल्ली) ने संस्था को भेंट दी । इस औचित्य पर वैदिक मंत्रोच्चार के साथ होम - हवन का आयोजन किया गया। होम-हवन के बाद महर्षि स्वामी दयानंद सरस्वती सभागार में प्रमुख अतिथियों का अध्यापकों के साथ विशेष संवाद संपन्न हुआ। इस कार्यक्रम का शुभारंभ डी.ए.व्ही. गान से किया गया।

इस समय दयानंद शिक्षण संस्था के स्थानिक सचिव, डॉ.व्ही.के. शर्मा, सौ. उमा शर्मा, दयानंद कला एवं शास्त्र महाविद्यालय के प्रधानाचार्य, डॉ. एस.के.वडगबाळकर, शिक्षणशास्त्र महाविद्यालय के प्रधानाचार्य डॉ. एस.बी.क्षीरसागर, वाणिज्य के प्रधानाचार्य डॉ. एस.आर.याजमान्य, आसावा प्रशाला के प्रधान अध्यापक श्री. जे.डी.पवार, रामभाऊ जोशी हायस्कूल करकंब के प्रधान अध्यापक श्री. एच.एस.कदम, इसके अतिरिक्त डॉ. पी.एच.बासुतकर, श्री.आर.जी.मस्के, डॉ. आर.एन.मुळीक, डॉ.व्ही.पी.उबाळे, उपप्रधानाचार्य श्री. एस.पी.गायकवाड. उपप्रधानाचार्य श्री.ए.व्ही.जोशी, श्री.व्ही.के.बिराजदार आदि उपस्थित थे।

इस पुनित अवसर पर दयानंद शिक्षण संस्था के स्थानिक सचिव, डॉ.व्ही.के.शर्मा जी के करकमलों व्दारा अतिथियों का सम्मान किया गया।

इस समय डॉ.व्ही.के.शर्मा जी ने कहा – दयानंद शिक्षा संस्था में आधुनिक काल के जरूरतों को पहचानकर मोडी, चीनी, अंग्रेजी, आदि भाषा-विषयों की शिक्षा व प्रशिक्षण दिया जा रहा है।

अपने विचार व्यक्त करते प्रमुख अतिथि डॉ.एस.के.शर्मा जी ने इस अवसर पर कहा- परंपरा एवं नवीनता इनका संयोग करके सामाजिक समानता शिक्षा के माध्यम से लाने हेतु महाराष्ट्र में आर्य समाज की स्थापना की गई। उन्होंने आगे कहा – देव, देश, धर्म व वैदिक तत्वज्ञान इन पर राष्ट्र खडा होना चाहिए। वेद सर्व समावेशक हैं। आर्य समाज में अंधश्रध्दा के लिए कोई स्थान नहीं है। स्वामी दयानंद सरस्वती ने 'सत्यार्थ प्रकाश' इस ग्रंथ व्दारा विश्व को महत्वपूर्ण संदेश दिया है।

इस समय पर श्री. सत्पाल आर्य जी ने कहा - हैद्राबाद के मराठवाडा मुक्ति-संग्राम में सोलापुर शहर का योगदान महत्वपूर्ण है। स्वतंत्रतापूर्व काल में निजाम के अत्याचार से जनता त्रस्त थी। इस पराधीनता के समय में महर्षि स्वामी दयानंद सरस्वती के अनुयायियों ने असीम स्वार्थ का त्याग किया तथा लोगों को देश भक्ति का पाठ पढाया। सामाजिक समानता के विचार दिए। राष्ट्र के कल्याण के लिए जान बुझकर फकिरी वृत्ति अपनाकर शिक्षा संस्था की नींव रखी। छत्रपती शिवाजी महाराज का यह महाराष्ट्र की भूमि देश को वैचारिक दिशा देनेवाली है, ऐसे भावपूर्ण उद्गार उन्होंने व्यक्त किए।

उक्त समारोह का सूत्रसंचलन सौ. तृप्ती बापट ने किया। प्रधानाचार्य डॉ.एस.के.वडगबाळकर जी ने उपस्थितों का आभार ज्ञापित किया। इस समारोह के लिए संस्था के सभी अध्यापक एवं कार्मिक उपस्थित थे। समारोह का समापन राष्ट्रगीत के साथ हुआ। इस पावन अवसर पर भारी संस्था के अध्यापक एवं कार्मिक उपस्थित थे।